'कद्दू की वैज्ञानिक खेती' विषय पर एडवाइजरी जारी

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में बीते दिन रविवार को किसानों के लिए कद्दू की वैज्ञानिक खेती विषय पर एडवाइजरी जारी की गई। जिसमें सब्जी विज्ञान विभाग के अनुभागाध्यक्ष डॉ. आर.बी. सिंह ने किसानों को बताया कि हमारे देश में कद्दू की खेती लगभग 217 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है। जिसका उत्पादन लगभग 2116 हजार मीट्रिक टन होता है। उन्होंने कहा की कुल सब्जी उत्पादन में कद्दू का महत्वपूर्ण योगदान है। अन्य सब्जियों की तुलना में कद्दू में कम कैलोरी होती है। और यह पाचक होने के कारण एक संतुलित आहार है। 100 ग्राम कद्दू में कैलोरी ऊर्जा, वसा 0.1 ग्राम, कार्बोहाइड्रेट 7 ग्राम, रेसा 0.5 ग्राम, प्रोटीन 1 ग्राम, सोडियम 1 ग्राम, पोटेशियम 340 मिलीग्राम इसके अतिरिक्त पर्याप्त मात्रा में वीटा केरोटीन, विटामिन्स एवं खनिज लवण पाए जाते हैं। उन्होंने किसानों को कद्दू फसल की बुआई के लिए मध्य फरवरी से मध्य मार्च तक करने की सलाह दी।

रहस्य संदेश

RNI NO. UPHIN/2007/20715

64, एटा से प्रकाशित, सोमवार, 06 मार्च, 2023 पृष्ठ: 8

कद्दू की करें वैज्ञानिक खेती, मिलेगा भरपूर उत्पादन : डॉक्टर आरबी सिंह

(अनवर अशरफ)

कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के सब्जी विज्ञान विभाग के अनुभागाध्यक्ष डॉक्टर आरबी सिंह ने किसानों हेतु कद्दू (काशीफल)की वैज्ञानिक खेती विषयक एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि हमारे देश में कद्दू की खेती लगभग 217 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है।और उत्पादन लगभग 2116 हजार मीट्रिक टन होता है। उन्होंने कहा की कुल सब्जी उत्पादन में कद्दू का महत्वपूर्ण योगदान है डॉ सिंह ने बताया कि अन्य सब्जियों की तुलना में कद्दू में कम कैलोरी तथा पाचक होने के कारण संतुलित आहार में योगदान है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि 100 ग्राम कद्दू में ऊर्जा 26 कैलोरी, वसा 0.1 ग्राम, कार्बोहाइड्रेट 7 ग्राम,रेसा 0.5 ग्राम,प्रोटीन 1 ग्राम, सोडियम 1 ग्राम,पोटेशियम 340 मिलीग्राम इसके अतिरिक्त पर्याप्त मात्रा में बीटा केरोटीन, विटामिन्स एवं खनिज लवण पाए जाते हैं। उन्होंने बताया की कद्दू फसल की अच्छी वृद्धि एवं फल के लिए 18 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है की कद्दू फसल की बुआई के लिए मध्य फरवरी से मध्य मार्च का समय अति उत्तम होता है। तथा बीज दर 4 से 5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर होती है। डॉक्टर शुक्ला ने कद्दू की उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि आजाद कद्दू–1, पूसा विश्वास, अर्का चंदन, पूसा अलंकार, नरेंद्र उपकार,पूसा हाइब्रिड–1 उत्तम प्रजातियां हैं। उन्होंने खाद एवं उर्वरकों के बारे में सलाह दी है किसान भाई 15 से 20 टन सड़ी हुई गोबर की खाद बुवाई के पूर्व मिट्टी में मिला दे। बुवाई के समय 80 से 100 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस और 40 से 50 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर आवश्यकता होती है। डॉक्टर सिंह ने कहा कि किसान भाई अच्छा फसल प्रबंधन करते हैं तो 350 से लेकर 400 कुंतल प्रति हेक्टेयर कद्दू की पैदावार मिलेगी। और किसानों की आय में वृद्धि होगी तथा वे आत्मनिर्भर बनेंगे।

कद्दू की करें वैज्ञानिक खेती, मिलेगा भरपूर उत्पादनः आरबी सिंह

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के सब्जी विज्ञान विभाग के अनुभागाध्यक्ष डॉक्टर आरबी सिंह ने किसानों हेतु कद्दू (काशीफल)की वैज्ञानिक खेती विषयक एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि हमारे देश में कद्दू की खेती लगभग 217 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है।और उत्पादन लगभग 2116 हजार मीट्रिक टन होता है। उन्होंने कहा की कुल सब्जी उत्पादन में कद्दू का महत्वपूर्ण योगदान है डॉ सिंह ने बताया कि अन्य सब्जियों की तुलना में कद्दू में कम कैलोरी तथा पाचक होने के कारण संतुलित आहार में योगदान है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि 100 ग्राम कद्दू में ऊर्जा 26 कैलोरी, वसा 0.1 ग्राम, कार्बोहाइड्रेट 7 ग्राम,रेसा 0.5 ग्राम,प्रोटीन 1 ग्राम, सोडियम 1 ग्राम,पोटेशियम 340 मिलीग्राम इसके अतिरिक्त पर्याप्त मात्रा में बीटा केरोटीन, विटामिन्स एवं खनिज लवण पाए जाते हैं। उन्होंने बताया की कद्दू फसल की अच्छी वृद्धि एवं फल के लिए 18 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है की कद्दू फसल की बुआई के लिए मध्य फरवरी से मध्य मार्च का समय अति उत्तम होता है। तथा बीज दर 4 से 5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर होती है। डॉक्टर शुक्ला ने कद्दू की उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि आजाद कद्दू-1, पूसा विश्वास, अर्का चंदन, पूसा अलंकार, नरेंद्र उपकार,पूसा हाइब्रिड-1 उत्तम प्रजातियां हैं। उन्होंने खाद एवं उर्वरकों के बारे में सलाह दी है किसान भाई 15 से 20 टन सड़ी हुई गोबर की खाद बुवाई के पूर्व मिट्टी में मिला दे। बुवाई के समय 80 से 100 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस और 40 से 50 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर आवश्यकता होती है। डॉक्टर सिंह ने कहा कि किसान भाई अच्छा फसल प्रबंधन करते हैं तो 350 से लेकर 400 कुंतल प्रति हेक्टेयर कद्दू की पैदावार मिलेगी। और किसानों की आय में वृद्धि होगी तथा वे आत्मनिर्भर बनेंगे।

कद्दू की करें वैज्ञानिक खेती, मिलेगा भरपूर उत्पादनः आरबी सिंह

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के सब्जी विज्ञान विभाग के अनुभागाध्यक्ष डॉक्टर आरबी सिंह ने किसानों हेतु कद्दू (काशीफल)की वैज्ञानिक खेती विषयक एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि हमारे देश में कद्दू की खेती लगभग 217 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है।और उत्पादन लगभग 2116 हजार मीट्रिक टन होता है। उन्होंने कहा की कुल सब्जी उत्पादन में कद्दू का महत्वपूर्ण योगदान है डॉ सिंह ने बताया कि अन्य सब्जियों की तुलना में कद्दू में कम कैलोरी तथा पाचक होने के कारण संतुलित आहार में योगदान है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि 100 ग्राम कद्दू में ऊर्जा 26 कैलोरी, वसा 0.1 ग्राम, कार्बोहाइड्रेट 7 ग्राम,रेसा 0.5 ग्राम,प्रोटीन 1 ग्राम, सोडियम 1 ग्राम,पोटेशियम 340 मिलीग्राम इसके अतिरिक्त पर्याप्त मात्रा में बीटा केरोटीन, विटामिन्स एवं खनिज लवण पाए जाते हैं। उन्होंने बताया की कद्दू फसल की अच्छी वृद्धि एवं फल के लिए 18 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है की कद्दू फसल की बुआई के लिए मध्य फरवरी से मध्य मार्च का समय अति उत्तम होता है। तथा बीज दर 4 से 5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर होती है। डॉक्टर शुक्ला ने कद्दू की उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि आजाद कद्दू-1, पूसा विश्वास, अर्का चंदन, पूसा अलंकार, नरेंद्र उपकार,पूसा हाइब्रिड-1 उत्तम प्रजातियां हैं। उन्होंने खाद एवं उर्वरकों के बारे में सलाह दी है किसान भाई 15 से 20 टन सड़ी हुई गोबर की खाद बुवाई के पूर्व मिट्टी में मिला दे। बुवाई के समय 80 से 100 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस और 40 से 50 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर आवश्यकता होती है। डॉक्टर सिंह ने कहा कि किसान भाई अच्छा फसल प्रबंधन करते हैं तो 350 से लेकर 400 कुंतल प्रति हेक्टेयर कद्दू की पैदावार मिलेगी। और किसानों की आय में वृद्धि होगी तथा वे आत्मनिर्भर बनेंगे।

वर्ष 17 अंक 64 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, सोमवार 06 मार्च 2023

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक नगर छाया

आप की आवाज़.....

कद्दू की करें वैज्ञानिक खेती, मिलेगा भरपूर उत्पादनः डॉ. आरबी सिंह

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के सब्जी विज्ञान विभाग के अनुभागाध्यक्ष डॉक्टर आरबी सिंह ने किसानों हेतु कद्दू (काशीफल)की वैज्ञानिक खेती विषयक एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि हमारे देश में कद्दू की खेती लगभग 217 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है।और उत्पादन लगभग 2116 हजार मीट्रिक टन होता है। उन्होंने कहा की कुल सब्जी उत्पादन में कद्दू का महत्वपूर्ण योगदान है डॉ सिंह ने बताया कि अन्य सब्जियों की तुलना में कद्दू में कम कैलोरी तथा पाचक होने के कारण संतुलित आहार में योगदान है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि 100 ग्राम कद्दू में ऊर्जा 26 कैलोरी, वसा 0.1 ग्राम, कार्बोहाइड्रेट 7 ग्राम,रेसा 0.5 ग्राम,प्रोटीन 1 ग्राम, सोडियम 1 ग्राम,पोटेशियम 340 मिलीग्राम इसके अतिरिक्त पर्याप्त मात्रा में वीटा केरोटीन, विटामिन्स एवं खनिज लवण पाए जाते हैं। उन्होंने बताया की कद्दू फसल की अच्छी वृद्धि एवं फल के लिए 18 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है की कद्दू फसल की बुआई के लिए मध्य फरवरी से मध्य मार्च का समय अति उत्तम होता है। तथा बीज दर 4 से 5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर होती है। डॉक्टर शुक्ला ने कद्दू की उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि आजाद कद्दू-1, पूसा विश्वास, अर्का चंदन, पूसा अलंकार, नरेंद्र उपकार,पूसा हाइब्रिड-1 उत्तम प्रजातियां हैं। उन्होंने खाद एवं उर्वरकों के बारे में सलाह दी है किसान भाई 15 से 20 टन सड़ी हुई गोबर की खाद बुवाई के पूर्व मिट्टी में मिला दे। बुवाई के समय 80 से 100 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस और 40 से 50 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर आवश्यकता होती है। डॉक्टर सिंह ने कहा कि किसान भाई अच्छा फसल प्रबंधन करते हैं तो 350 से लेकर 400 कुंतल प्रति हेक्टेयर कद्दू की पैदावार मिलेगी। और किसानों की आय में वृद्धि होगी तथा वे आत्मनिर्भर बनेंगे।